आगम-अनुयोग

भाग-1

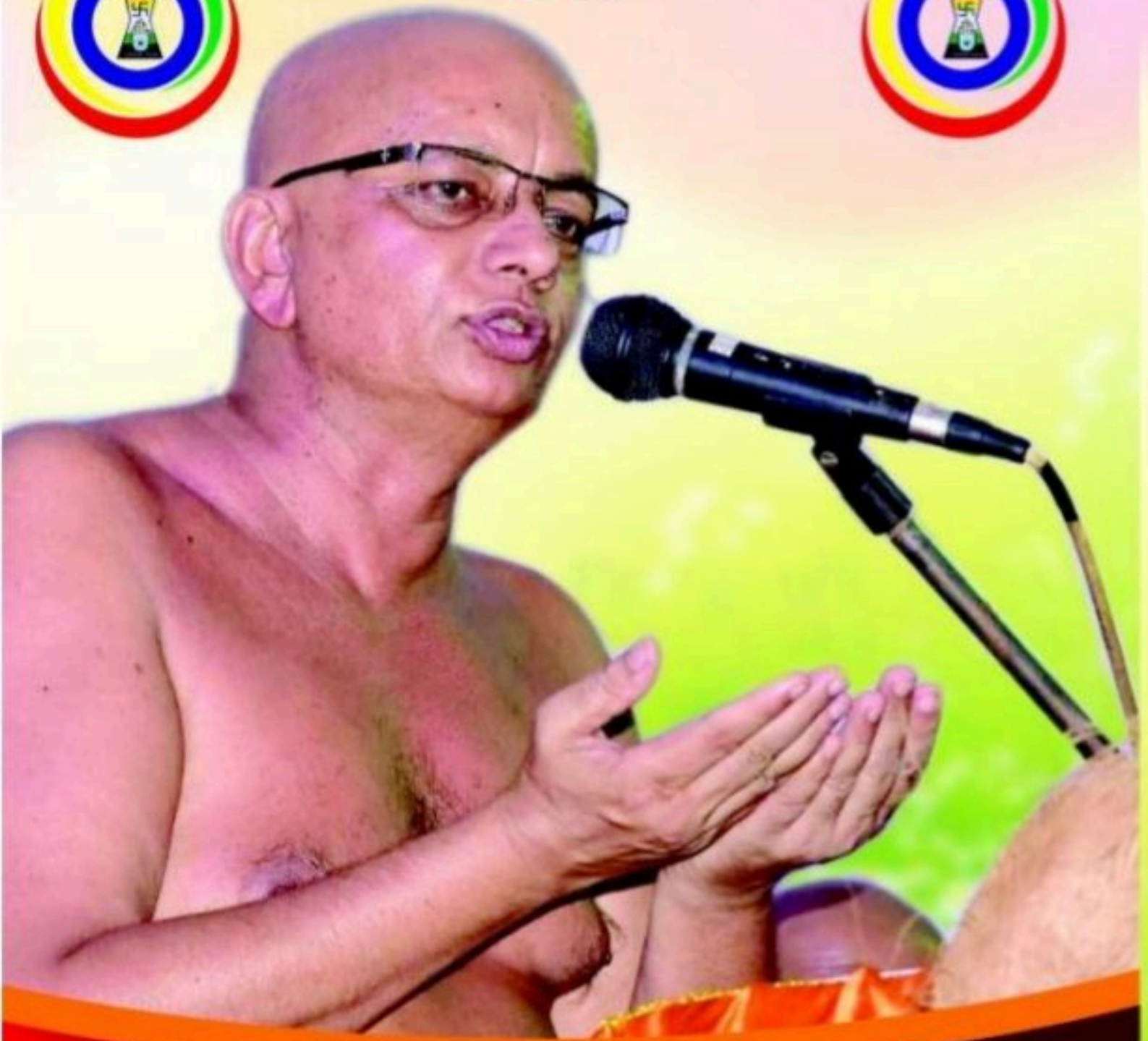

रचयिता-आचार्यश्री 108 आर्जवसागर

सम्यग्ज्ञान भूषण पदवी हेतु शिविर का आयोजन

आगम अनुयोग प्रश्नोत्तर प्रदीप

मंगल आशीर्वाद एवं प्रेरणा- आचार्य गुरुदेव श्री आर्जवसागर जी महाराज

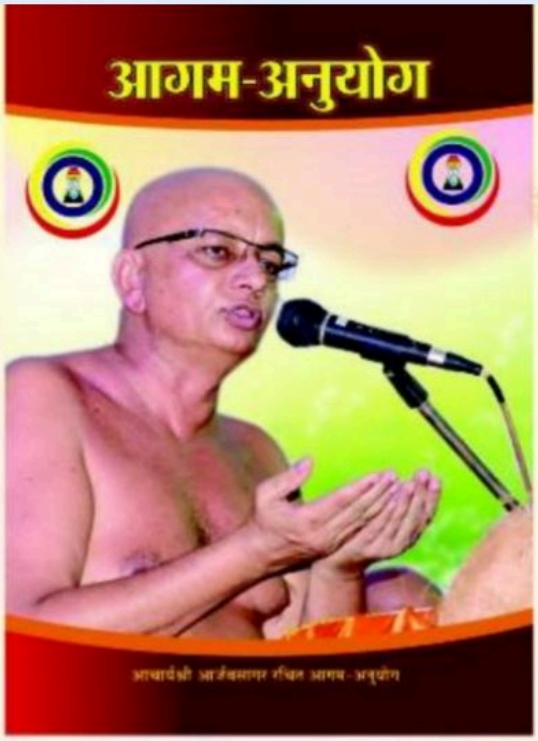

बहुमूल्य कृति : आगम-अनुयोग

'आगम-अनुयोग' एक ऐसी अनूठी, अद्वितीय (unique) कृति है; जिसमें जैन धर्म के चारों अनुयोगों का सार समाहित है। यह बहुमूल्य कृति पाठशालाओं एवं सामूहिक स्वाध्याय के लिये अत्यंत मूल्यवान एवं बहुपयोगी है। इस कृति में जैनधर्म की लोक-अलोक की विस्तृत जानकारी का समावेश है। 'आगम-अनुयोग' प्रश्नोत्तर प्रदीप कृति रूप में अत्यंत सरल शब्दों में आगम को सम्यग्ज्ञान वर्धिनी होकर कल्याणकारी रूप मोक्ष रूपी शिवालय को प्राप्त करने में नौका सदृश है।

इसके स्वाध्याय के माध्यम से भव्य लोग सम्यग्ज्ञान-भूषण सिद्धांत भूषण पदवी को भी प्राप्त कर सकते हैं।

प्रतियोगिता का उद्देश्य शास्त्र स्वाध्याय द्वारा ज्ञान के क्षयोपशम में वृद्धि करना होता है। इसलिए आगे भी ऐसे ही स्वाध्याय करते रहें और प्रतियोगिता के विजेता बनें।

दिनांक- 3 मई से 2 जून 2022 तक

आयोजक- गुरु आर्जव वाणी एवं भाव विज्ञान परिवार, भोपाल

अध्याय - 6. लोक रचनादि

प्र. 525 लोक कहाँ पर स्थित है?

उत्तर समस्त आकाश के मध्य में लोक स्थित है। तथा उसके बाहर सर्व दिशाओं में अनन्त आकाश है जो अलोकाकाश कहलाता है।

प्र.526 सम्पूर्ण लोक को किसने बनाया है?

उत्तर यह सम्पूर्ण लोक स्वाभाविक रूप से अकृत्रिम है, किसी के द्वारा रचाया हुआ नहीं, न इसका आदि है और न अन्त है, यह नित्य और शाश्वत रूप है।

प्र.527 लोक का आकार किस तरह का है?

उत्तर अपने दोनों पैरों को फैलाकर और दोनों हाथों को अपनी कमर के दोनों ओर रखकर खड़े हुए पुरुष सदृश लोक का आकार है अथवा वेत्रासन सदृश आधे मृदंग को खड़ा करके उसके ऊपर पूरे मृदंग को खड़ा रखने जैसा आकार वाला लोक आकार है।

प्र.528 लोक का विस्तार कितना है?

उत्तर लोक का विस्तार दक्षिणोत्तर दिशारूप से सर्वत्र सात राजू मोटा है। पूर्व से पश्चिम दिशाओं में नीचे सात राजू, ऊपर की ओर क्रमशः घटता हुआ मध्य लोक में एक राजू, फिर क्रम से बढ़ता हुआ ब्रह्मलोक के पास पांच राजू, तदुपरान्त क्रम से घटता हुआ अन्त में एक राजू प्रमाण चौड़ा है।

प्र.529 लोक की ऊँचाई कितनी है?

उत्तर लोक की ऊँचाई अधोलोक से लेकर ऊपर अन्त तक चौदह राजू प्रमाण है।

प्र.530 सम्पूर्ण लोक का घन-फल कितना है?

उत्तर सम्पूर्ण लोक का घनफल सात राजू का घन अर्थात् तीन सौ तैतालीस घन राजू प्रमाण है।

प्र.531 अधोलोक का क्षेत्रफल और घनफल कितना है?

उत्तर अधोलोक की चौड़ाई का मुख (प्रारम्भ) एक राजू, भूमि सात राजू फिर इन दोनों को जोड़कर आधा करने पर चार राजू होते हैं यह अधोलोक का क्षेत्रफल है, इस चार राजू को पद अर्थात् ऊँचाई सात राजू से गुणा करने पर अट्ठाईस वर्ग राजू अधोलोक का क्षेत्रफल होता है। इस क्षेत्रफल का दक्षिणोत्तर विस्तार सात राजू से गुणा करने पर एक सौ छियानवे घन राजू अधोलोक का घनफल होता है।

प्र.532 ऊर्ध्वलोक का क्षेत्रफल और घनफल कितना है?

उत्तर अर्ध ऊर्ध्वलोक की चौड़ाई का मुख (नीचे से प्रारम्भ) एक राजू भूमि (ऊपर अंत) पाँच राजू इन दोनों को जोड़कर आधा करने से तीन राजू होते हैं, इस तीन राजू को पद अर्थात् ऊँचाई साढ़े तीन राजू से गुणा करने पर इक्कीस बटा दो वर्ग राजू अर्ध ऊर्ध्वलोक का क्षेत्रफल होता है। इस क्षेत्रफल को दक्षिणोत्तर विस्तार सात राजू से गुणा करने पर एक सौ सैतालीस बटा दो घन राजू अर्ध ऊर्ध्वलोक का घनफल

प्राप्त होता है। इससे दुगुणा व्यालीस वर्ग राजू और एक सौ सैतालीस घन राजू क्रमशः पूरे ऊर्ध्व लोक का क्षेत्रफल और घनफल प्राप्त होता है।

प्र.533 आगम में अधोलोक की रचना किस तरह की विधिवत् वर्णित की गई है?

उत्तर जिनागम में वर्णित है कि मेरु पर्वत के नीचे सात राजू प्रमाण अधोलोक है। मेरु पर्वत के तल से लेकर छः राजू में रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, बालुकाप्रभा, पङ्कप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा और महातमःप्रभा नाम की सात पृथ्वियाँ हैं। इसके नीचे एक राजू प्रमाण स्थान भूमि बिना निगोद आदिक पाँच स्थावरों से युक्त स्थावरलोक या कलकल लोक है। (विशेष वर्णन आगे कहेंगे)

प्र.534 मध्यलोक का स्वरूप किस तरह का है?

उत्तर मेरु पर्वत की ऊँचाई प्रमाण मध्यलोक है। जहाँ असंख्यात द्वीप समुद्रों के बीचों बीच मेरु पर्वत है जो एक हजार योजन पृथ्वी के अंदर जड़रूप से स्थित है। निन्यानवे हजार योजन बाहर अर्थात् पृथ्वी पर है और चालीस योजन ऊँची जिसकी चूलिका है।

प्र.535 ऊर्ध्वलोक का स्वरूप कैसा है?

उत्तर ऊर्ध्वलोक की ऊँचाई; मध्यलोक की ऊँचाई एक लाख चालीस योजन से कम सात राजू प्रमाण है। मेरु पर्वत की चूलिका से एक बाल का अन्तर देकर लोकान्त तक अर्थात् सात राजू पर्यन्त ऊर्ध्वलोक है। ऊर्ध्वलोक में सोलह स्वर्ग, नौ ग्रैवेयक, नौ अनुदिश, पञ्च अनुत्तर एवं सिद्ध लोक की रचना है।

प्र.536 सम्पूर्ण लोक का आधार क्या है? और वह आधार किस रूप में है?

उत्तर घनोदधि वातवलय, घनवातवलय और तनुवातवलय ये तीन वातवलय लोक का आधार हैं। जैसे- वृक्ष छाल से घिरा होता है वैसे ही लोक इन वातवलयों घिरा हुआ है। जिस तरह किसी खिलोने की नली को मुख के द्वारा सावधानी पूर्वक धीरे-धीरे फूके जाने पर वायु के दबाव से एक हल्की सी गेंद उस वायु के बीच ऊपर उठी (या उड़ती सी) रहती है उसी तरह सभी ओर से व घने रूप से बड़े प्रमाण में वायु के दबाव से यह तीन लोक अनन्त आकाश के बीचोंबीच उस वायु रूपी वातवलयों के आधार से टिका हुआ है।

प्र.537 तीनों वातवलयों का रंग कैसा है?

उत्तर तीनों वातवलयों का रंग क्रमशः हल्का पीत गोमूत्रवत्, हल्का हरित मूंगवत् और अनेक रंगों से मिश्रित है।

प्र.538 लोक में तीनों वातवलयों की मोटाई कहाँ, कितनी है?

उत्तर लोकाकाश के अधोभाग में, दोनों पार्श्वभागों में नीचे से एक राजू ऊँचाई अर्थात् पञ्च स्थावर लोक पर्यन्त तीनों वातवलय प्रत्येक बीस-बीस हजार योजन मोटे हैं। दोनों पार्श्वभागों में एक राजू के ऊपर सप्तम पृथ्वी के निकट आठों दिशाओं में तीनों वातवलय यथाक्रम से सात, पाँच, और चार योजन मोटे हैं। फिर क्रमशः घटते हुए मध्यलोक की आठों दिशाओं में पाँच, चार और तीन योजन मोटे रह जाते हैं। आगे क्रमशः बढ़ते हुए ब्रह्मलोक की आठों दिशाओं में सात, पाँच और चार योजन मोटे हो जाते हैं।

फिर ऊपर क्रमशः घटते हुए लोकाग्र के पार्श्व भाग में पाँच, चार और तीन योजन मोटे रह जाते हैं। अन्त में ये तीनों ही वातवलय लोक शिखर पर क्रमशः दो कोस, एक कोस और पन्द्रह सौ पचत्तर धनुष प्रमाण मोटे रह जाते हैं।

प्र.539 लोक का मध्य स्थान कौन-सा कहलाता है?

उत्तर लोक मध्यलोक में स्थित मेरु पर्वत के नीचे वज्र व वैडूर्य पटलों के बीच में चौकोर संस्थान रूप से अवस्थित आकाश के आठ प्रदेश लोक का मध्य कहलाते हैं।

प्र.540 लोक में कौन-से स्वर्ग आदिक और लोकान्त तक की ऊँचाई तक कितने राजू के प्रमाण रूप लोक होता है?

उत्तर लोक मध्य से ऊपर ऐशान स्वर्ग एक डेढ़ राजू, माहेन्द्र स्वर्ग तक तीन राजू, ब्रह्मस्वर्ग तक साढ़े तीन राजू, कापिष्ठ स्वर्ग तक चार राजू, महाशुक्र स्वर्ग तक साढ़े चार राजू, सहस्रार स्वर्ग तक पाँच राजू, प्राणत स्वर्ग तक साढ़े पाँच राजू, अच्युत स्वर्ग तक छः राजू और लोकान्त तक सात राजू ऊँचाई है।

प्र.541 लोक में अधोलोक सम्बन्धी कौन-सी भूमि तक कितने राजू का प्रमाण होता है?

उत्तर लोक मध्य से शर्करा पृथ्वी तक एक राजू, उसके नीचे पुनः पाँचों पृथ्वियाँ क्रमशः एक-एक राजू प्रमाण में हैं। इस तरह सप्तम पृथ्वी तक छः राजू और कलकल नामक लोक से नीचे लोकान्त तक सात राजू होते हैं।

प्र.542 लोक की चौड़ाई कहाँ कितनी है?

उत्तर लोक के नीचे अधोलोक के मूल में चौड़ाई सात राजू, मध्यलोक में एक राजू, ब्रह्मलोक में पाँच राजू और लोक के अग्रभाग रूप सर्वोच्य स्थान पर एक राजू चौड़ाई है।

प्र.543 लोक में कौन-से जीव कहाँ पाये जाते हैं?

उत्तर पृथ्वीकायिक आदि पाँच स्थावर जीव सम्पूर्ण लोक में भरे हुए हैं, परन्तु त्रस जीव समुद्घातादि अवस्थाओं के बिना जीव त्रस नाड़ी में ही रहते हैं।

प्र.544 त्रस नाड़ी कहाँ है और वह कितनी लम्बी, चौड़ी और ऊँची है?

उत्तर त्रस नाड़ी लोक के मध्य में है और वह एक राजू लम्बी, एक राजू चौड़ी तथा चौदह राजू ऊँची है।

प्र.545 त्रस नाड़ी यह नाम क्यों पड़ा, क्या त्रस नाड़ी में त्रस जीव मात्र ही रहते हैं या स्थावर जीव भी रहते हैं तथा त्रस जीव त्रस नाड़ी के सम्पूर्ण स्थान में रहते हैं या कुछ विशेषता है?

उत्तर त्रस जीवों के रहने का स्थान मात्र त्रस नाड़ी ही है अतः त्रस जीवों के रहने के स्थान का सार्थक नाम त्रस नाड़ी पड़ा। स्थावर जीव तो लोक में त्रसनाड़ी के अन्दर बाहर सर्वत्र पाये जाते हैं। तथा त्रस नाड़ी में भी त्रस जीव कुछ कम तेरह राजू के स्थान में ही पाये जाते हैं।

प्र.546 त्रस नाड़ी में त्रस जीवों से रहित स्थान कौन-कौन-सा है?

उत्तर त्रस नाड़ी में स्थित सप्तम महातमः पृथ्वी के मध्य भाग में ही नारकी रहते हैं उसके नीचे वे त्रस जीव नहीं रहते हैं।

सातवी पृथ्वी के नीचे कलकल लोक के एक राजू प्रमाण क्षेत्र में त्रसों के बिना पंच स्थावर जीव मात्र ही रहते हैं। ऊर्ध्वलोक में भी सर्वार्थसिद्धि विमान तक ही त्रस जीव रहते हैं। लोक के अग्रभाग में त्रसादि नामकर्म या अष्टकर्म रहित सिद्ध परमेष्ठियों का निवास है।

प्र. 547 उपपाद की अपेक्षा त्रस जीव त्रस नाड़ी के बाहर किस तरह से पाये जाते हैं?

उत्तर त्रस नाड़ी के बाहर रहने वाला कोई स्थावर जीव मरण करके त्रस पर्याय में उत्पन्न होने के लिए त्रस नाड़ी की ओर आ रहा है; उस समय उस जीव के विग्रहगति में ही त्रसनामकर्म का उदय आ जाने से जितने समय तक वह त्रसनाड़ी के बाहर विग्रहगति में रहता है, उतने समय तक उपपाद की अपेक्षा उस त्रस जीव का त्रसनाड़ी के बाहर सद्भाव पाया जाता है।

प्र.548 मारणान्तिक समुद्घात की अपेक्षा त्रसजीव त्रसनाड़ी के बाहर किस तरह से पाया जाता है?

उत्तर त्रस नाड़ी के भीतर रहने वाला कोई त्रसजीव त्रस नाड़ी के बाहर स्थावर जीव में उत्पन्न होने के लिए मरण से पूर्व मारणान्तिक समुद्घात करता है; मरण से पूर्व उस जीव के त्रसनामकर्म का उदय पाया जाने से त्रसनामकर्म सहित वह जीव त्रसनाड़ी के बाहर पाया जाता है।

प्र.549 लोक पूरण समुद्घात की अपेक्षा त्रसजीव त्रसनाड़ी के बाहर किस रूप में पाया जाता है?

उत्तर लोकपूरण समुद्घात में जब केवली भगवान् के आत्मप्रदेश समस्त लोक में फैलते हैं, उस समय भी त्रसनाड़ी के बाहर त्रसजीव (केवली भगवान का त्रसनामकर्म का उदय होने से) पाये जाते हैं।

प्र.550 रत्नप्रभा नामक प्रथम पृथ्वी के कितने भाग हैं?

उत्तर रत्नप्रभा नामक प्रथम पृथ्वी के तीन भाग हैं- खरभाग, पंकभाग और अब्बहुल भाग।

प्र.551 खरभाग, पंकभाग और अब्बहुलभाग का बाहल्य (मोटाई) का प्रमाण कितना है?

उत्तर खरभाग, पंकभाग और अब्बहुलभाग का बाहल्य क्रमशः सोलह हजार योजन, चौरासी हजार योजन और अस्सी हजार योजन है। अतः प्रथम पृथ्वी की मोटाई (बाहल्य) एक लाख अस्सी हजार योजन प्रमाण है।

प्र.552 खरभाग में कितने बाहल्य प्रमाण वाली कितनी और कौन-सी उप पृथ्वियाँ हैं?

उत्तर खरभाग में एक-एक हजार योजन मोटी 1. चित्रा, 2. वज्रा, 3. वैडूर्या, 4.लोहिता, 5. मसारकल्पा, 6.गोमेदा, 7.प्रवाला, 8.ज्योतिरसा, 9.अञ्जना, 10.अञ्जनमूलिका, 11.अङ्का, 12.स्फटिका, 13.चन्दना, 14.सर्वार्थका, 15.बकुला और 16.शैला ये सोलह उप पृथ्वियाँ हैं। विशेष- इन पृथ्वियों के बीच में किसी में किसी प्रकार का अन्तराल नहीं है।

प्र.553 इन चित्रा आदि पृथ्वियों की लम्बाई, चौड़ाई कितनी है?

उत्तर इन चित्रा आदि पृथ्वियों की लम्बाई, चौड़ाई पंकभाग व अब्बहुल भाग की तरह लोक प्रमाण है। तिर्यक् में ये पृथ्वियाँ वातवलयों तक फैली हुई हैं।

प्र.554 शर्करा आदिक पृथ्वियों की मोटाई कितनी है?

उत्तर द्वितीय शर्करा प्रभा पृथ्वी की मोटाई 32,000 योजन, बालुका प्रभा की 28,000 योजन, पंकप्रभा की

24,000 योजन, धूमप्रभाकी 20,000 योजन, तम:प्रभा की 16,000 योजन और महातम:प्रभा की 8,000 योजन मोटाई है।

प्र.555 रत्नप्रभादि सप्त पृथ्वीयों में पटलों (पाथड़ों) की संख्या कितनी है?

उत्तर रत्नप्रभा पृथ्वी में 13 पटल, शर्कराप्रभा में 11 पटल, बालुकाप्रभा में 9 पटल, पंकप्रभा में 7 पटल, धूमप्रभा में 5 पटल, तम:प्रभा में 3 पटल और महातम:प्रभा में 1 पटल है। इस तरह सातों पृथ्वियों में कुल 49 पटल हैं। ये पटल एक दूसरे से संश्लिष्ट (सटे) हैं।

प्र.556 नरक और नारकी किसे कहते हैं?

उत्तर रत्नप्रभादिक सप्त पृथ्वियों के पटलों में होने वाले कुएँ के समान बिलों को नरक कहते हैं और उन नरकों में रहने वाले नारकी कहलाते हैं।

प्र.557 पृथ्वी-पटलों में होने वाले नरक-बिलों के नाम किस रूप में होते हैं?

उत्तर पृथ्वी-पटलों में होने वाले नरक-बिलों के नाम इन्द्रक, श्रेणिबद्ध और प्रकीर्णक रूप में होते हैं।

प्र.558 नरक-बिलों की इन्द्रक आदि संज्ञा क्यों है?

उत्तर जो अपने पटल के सर्व बिलों के बीचोंबीच में होता है, उसे इन्द्रक बिल कहते हैं। इस इन्द्रक बिल की चारों दिशाओं एवं विदिशाओं में जो बिल पंक्तिरूप से स्थित होते हैं, उन्हें श्रेणिबद्ध बिल कहते हैं। जो श्रेणिबद्ध बिलों के बीच-बीच में बिखरे हुए पुष्पों के समान यत्र-तत्र स्थित हैं, उन्हें प्रकीर्णक बिल कहते हैं। यह रचना अधोलोक की पृथ्वियों सम्बन्धी प्रत्येक पटल में रहती है।

प्र.559 सप्त पृथ्वियों के पटलों में नरक बिल कितने हैं और उन बिलों का विन्यास कहाँ व किस तरह से है?

उत्तर प्रथम रत्नप्रभा पृथ्वी के तेरह पटलों में तेरह इन्द्रक बिल हैं। दूसरी आदि पृथ्वियों में पटलों की संख्यानुसार ही क्रमश: ग्यारह, नौ, सात, पाँच, तीन और एक इन्द्रक बिल हैं, इस तरह कुल बिल संख्या उनन्चास है।

प्रथम भूमि के प्रथम पटल में स्थित इन्द्रक बिल की एक-एक दिशा में 49-49 और विदिशाओं में 48-48 श्रेणिबद्ध बिल हैं। द्वितीयादि इन्द्रक बिल से लेकर सप्तम पृथ्वी स्थित अन्तिम इन्द्रक बिल तक श्रेणिबद्ध बिलों की संख्या एक-एक कम होते हुए अन्तिम इन्द्रक बिल की चारों दिशाओं में तो एक-एक श्रेणिबद्ध बिल मिलता है। परन्तु विदिशाओं में श्रेणिबद्ध बिलों का अभाव है। सातवी पृथ्वी में प्रकीर्णक बिलों का अभाव है।

प्र.560 सप्त पृथ्वियों में श्रेणीबद्ध नरक-बिलों की सम्पूर्ण संख्या कितनी है?

उत्तर रत्नप्रभादि सप्त पृथ्वियों में श्रेणीबद्ध रूप सम्पूर्ण नरक-बिलों की संख्या नौ हजार छह सौ चार है।

प्र.561 प्रथम पृथ्वी से लेकर छठी पृथ्वी तक प्रकीर्णक नरक-बिलों की सम्पूर्ण संख्या कितनी है?

उत्तर प्रथम पृथ्वी से लेकर छठी पृथ्वी तक प्रकीर्णक नरक-बिलों की सम्पूर्ण संख्या तेरासी लाख नब्बै हजार तीन सौ सैंतालीस है।

प्र.562 रत्नप्रभादि सप्त पृथ्वियों में स्थित नरक-बिलों की संख्या कितनी-कितनी है?

उत्तर रत्नप्रभादि सप्त पृथ्वियों में स्थित नरक-बिलों की संख्या क्रमशः तीस लाख, पच्चीस लाख, पन्द्रह लाख, दस लाख, तीन लाख, पांच कम एक लाख और मात्र पाँच है।

प्र.563 सप्त पृथ्वियों के सम्पूर्ण नरक-बिलों की संख्या कितनी है?

उत्तर सप्त पृथ्वियों के सम्पूर्ण नरक-बिलों की संख्या चौरासी लाख है।

प्र.564 नरक-बिलों का विस्तार और आकार कितना और कैसा होता है?

उत्तर इन्द्रक नामक नरक-बिल संख्यात योजन विस्तार वाले ही होते हैं। श्रेणीबद्ध नरक-बिल असंख्यात योजन विस्तार वाले और प्रकीर्णकों में कुछ प्रकीर्णक बिल संख्यात योजन और कुछ असंख्यात योजन विस्तार वाले होते हैं। ये नरक-बिल गोल, चौकोर और त्रिकोण आकार वाले होते हैं।

प्र.565 कौन-सी पृथ्वी पर्यन्त के कितने नरक-बिलों में नारकी जीवों के लिए कैसी तीव्र उष्ण की वेदना होती है?

उत्तर प्रथम पृथ्वी से लेकर पांचवी पृथ्वी के चार भागों में से तीन भागों पर्यन्त में स्थित 82,25,000 नरक-बिलों में नारकी जीवों के लिए लोहे के गोले को पिघलाने जैसी तीव्र उष्ण वेदना होती है।

प्र.566 कौन-सी पृथ्वी से कौन-सी पृथ्वी पर्यंत वाले कितने नरक-बिलों में स्थित नारकी जीवों के लिए कैसी अत्यन्त शीत वेदना होती है?

उत्तर पाँचवी पृथ्वी के शेष चौथाई भाग में तथा छठी और सातवी पृथ्वी में स्थित 1,75,000 नरक-बिलों में नारकी जीवों के लिए लोह के पानी को गोले रूप जमाने जैसी अत्यन्त शीत वेदना होती है।

प्र.567 रत्नप्रभा पृथ्वी के प्रथम सीमन्तक नामक इन्द्रक बिल का विस्तार कितना है?

उत्तर रत्नप्रभा पृथ्वी के प्रथम सीमन्तक नामक इन्द्रक बिल का विस्तार मनुष्य क्षेत्र सदृश पैंतालीस लाख योजन प्रमाण है।

प्र.568 महातमःप्रभा पृथ्वी के अवधिस्थान नामक अन्तिम बिल का विस्तार कितना है?

उत्तर महातमःप्रभा पृथ्वी के अवधिस्थान नामक अन्तिम बिल का विस्तार जम्बूदीप सदृश एक लाख योजन प्रमाण है।

प्र.569 नारकियों के उत्पत्ति स्थान कहाँ पर और कैसे आकार वाले हैं?

उत्तर नारकियों के उत्पत्ति स्थान नरक-बिलों के उपरिम भाग में अनेक प्रकार के शस्त्रों से युक्त अधोमुख कण्ठ वाले, भीतर गोल तथा बाहर सात, तीन, दो, एक और पाँच कोने वाले होते हुए उष्ट्रिका कुम्भी आकार रूप अनेक मुखाकार होते हैं।

प्र.570 नारकियों के उत्पत्ति स्थानों की चौड़ाई और ऊँचाई कितनी है?

उत्तर नारकियों के उत्पत्ति स्थानों की चौड़ाई प्रथम पृथ्वी से लेकर सातवीं पृथ्वी तक क्रमशः एक कोस, दो कोस, तीन कोस, एक योजन, दो योजन, तीन योजन और सौ योजन प्रमाण है। तथा ऊँचाई अपनी-अपनी अवगाहना से पाँच गुणी है।

प्र.571 उत्पत्ति स्थानों में उत्पन्न होते ही नारकियों की क्या स्थिति होती है?

उत्तर उत्पत्ति स्थानों में उत्पन्न होते ही नारकी तीक्ष्ण शस्त्रों पर गिरते हुए सातों पृथ्वियों के नरक-बिलों में क्रमश: 7 योजन $3\frac{1}{4}$ कोस, 15 योजन $2\frac{1}{2}$ कोस, 31 योजन 1 कोस, 62 योजन 2 कोस, 125 योजन, 250 योजन तथा 500 योजन ऊपर उछलते हैं और पुन: शस्त्रों पर आ पड़ते हैं।

प्र.572 नारकियों के शरीर की ऊँचाई कितनी होती है?

उत्तर प्रथम रत्नप्रभा पृथ्वी के अन्तिम पटल में स्थित नारकियों के शरीर की ऊँचाई 7 धनुष 3 हाथ और 6 अंगुल प्रमाण होती है। शेष द्वितीयादि पृथ्वियों के अन्तिम पटल में रहने वाले नारकियों के शरीर की ऊँचाई क्रमश: दूनी-दूनी होते हुए सप्तम पृथ्वी के पटल में रहने वाले नारकियों के शरीर की ऊँचाई 500 धनुष प्रमाण होती है।

प्र.573 नारकियों की कौन-सी विक्रिया होती हैं?

उत्तर नारकियों की देवों सम पृथक विक्रिया न होकर अपृथक विक्रिया होती है।

प्र.574 अपृथक विक्रिया को नारकी किस तरह किया करते हैं?

उत्तर अपृथक विक्रिया को करते हुए नारकी अपने वैक्रियक शरीर को ही सर्प, व्याघ्र, भेड़िया, उल्लू, कौआ, बिच्छू, गृद्ध, कुत्ता, रीछ आदि तिर्यञ्च रूप तथा त्रिशूल, अग्नि, बरछी, तलवार, मुद्गर और सेमर वृक्ष आदि रूप बनाते हैं।

प्र.575 नरकों का वातावरण कैसा होता है?

उत्तर नरकों का सम्पूर्ण वातावरण महादु:खमय होता है। हजार बिच्छुओं के युगपत् काटे जाने पर जितनी वेदना होती उससे भी अधिक वेदना नरक भूमि के स्पर्श मात्र से होती है।

प्र.576 नरकों में नारकियों को होने वाले दु:ख कौन-कौन-से हैं?

उत्तर नरकों में नारकियों के लिए क्षेत्रीय, नारकी जीवों से उत्पन्न मानसिक, वाचनिक और कायिक तथा देवकृत भी अनेक असहनीय दु:ख प्राप्त होते हैं जैसे-

- तीन लोक के अनाज खाने जैसी भूख लगना।
- समुद्र के जैसे जल पी जाने वाली प्यास सताना।
- आपसी लड़ाई द्वारा बैर भंजाना।
- देवों द्वारा लड़ाया, भड़काया जाना।
- शस्त्रों पर गिराया जाना।
- यन्त्रों में पेला जाना।
- भाड़ में झोका जाना।
- कढ़ाई में तलाया जाना।
- शस्त्रों से छेदा और काटा जाना।

- जलती ज्वालाओं में पकाया जाना।
- पत्तों से तन कट जाना।
- गरम पुतली से चिपकाना।
- लोह रस पिलाया जाना।
- पारे की तरह तन का पिघल जाना।
- तन के तिल-तिल सम टुकड़े किये जाना।
- सिंह, भालू, कुत्ता, सर्प, गिद्ध और कौआ आदिक हिंसक तिर्यञ्चों द्वारा तन का भक्षण किया जाना इत्यादि।

प्र.577 नारकियों के लिए कहाँ तक कौन, कैसे लड़ाते भिड़ाते हैं?

उत्तर नारकियों के लिए तृतीय बालुका प्रभा पृथ्वी तक, असुरकुमार देवों में मिथ्या दृष्टि व पापिष्ठ स्वभाव वाले अम्बावरीष नामक दुष्ट देव नारकियों का बैर स्मरण कराकर उन्हें लड़ाते और भिड़ाते हुए मनोरञ्जन करते हैं।

प्र.578 नारकियों का भोजन किस तरह का होता है?

उत्तर नारकी जीव सड़े हुए माँस से भी अधिक दुर्गन्धित मिट्टी का आहार करते हैं।

प्र.579 नरकों में नारकियों का अवधिज्ञान कितने क्षेत्र तक होता है?

उत्तर सातों पृथ्वियों में क्रमशः नारकियों का अवधिज्ञान चार कोस, साढ़े तीन कोस, तीन कोस, ढाई कोस, दो कोस, डेढ़ कोस और एक कोस तक की वस्तु को जानता है।

प्र.580 रत्नप्रभादि पृथ्वियों में जन्म व मरण का अन्तरकाल कितना होता है?

उत्तर रत्नप्रभादि पृथ्वियों में नारकियों का जन्म व मरण के अधिक से अधिक अन्तरकाल का प्रमाण क्रमशः चौबीस मुहूर्त्त, सात दिवस, एक पक्ष, एक माह, दो माह, चार माह और छह माह है। अन्यथा हर समय जन्म-मरण है।

प्र.581 नरक गति से निकलने वाले जीवों की उत्पत्ति कहाँ-कहाँ पर होती है?

उत्तर नरक गति से निकले हुए जीव मनुष्य गति और तिर्यञ्च गति में ही उत्पन्न होते हैं। सातवी पृथ्वी से निकला हुआ जीव तिर्यञ्च गति में ही जन्म लेता है।

प्र.582 नरक गति से आकर जीव मनुष्य व तिर्यञ्च गति में कौन-कौन-सी अवस्था का प्राप्त होता है?

उत्तर ऐसा जीव कर्मभूमिज, गर्भज संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक मनुष्य और तिर्यञ्चों में ही जन्म लेता है।

प्र.583 सप्तम पृथ्वी से निकला जीव तिर्यञ्च गति में ही क्यों जन्म लेता है?

उत्तर क्योंकि सप्तम पृथ्वी से निकला जीव एक बार पुनः नरक में जावेगा यह नियोग है अतः वहाँ से निकल कर क्रूर तिर्यञ्च होता है और भयानक-अतीव पाप कर पुनः नरक में जाता है।

प्र.584 नरकों से निकले नारकी किन-किन अवस्थाओं में पैदा नहीं होते हैं?

उत्तर नरकों से निकले जीव एकेन्द्रिय, विकलत्रय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय, भोगभूमि, लब्ध्यपर्याप्तक, सम्मूर्च्छन और देव पर्याय के जीव रूप में उत्पन्न नहीं होते हैं।

प्र.585 नरकगति से निकले जीव कौन-से पदधारी अवस्थाओं में उत्पन्न नहीं होते हैं?

उत्तर नरकगति से निकले जीव नारायण, प्रतिनारायण, बलभद्र और चक्रवर्ती पदधारी अवस्थाओं में कदापि उत्पन्न नहीं होते हैं।

प्र.586 तीर्थंकर प्रकृति बंध वाला जीव नीचे कितनी पृथ्वियों तक उत्पन्न हो सकता है?

उत्तर तीर्थंकर प्रकृति बंध वाला जीव नीचे तीन पृथ्वियों तक उत्पन्न हो सकता है।

प्र.587 तीर्थंकर प्रकृति का बंध करने वाला जीव किस कारण नरक पृथ्वियों में जाता है?

उत्तर जिस मनुष्य ने सम्यक्त्व धारण के पूर्व नरकायु का बंध कर लिया है, पश्चात् सम्यक्त्व को प्राप्त कर तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया है ऐसा जीव तीर्थंकर प्रकृति की सत्ता वाला कहलाता है। वह नीचे तीसरी पृथ्वी तक के नरकों में उत्पन्न हो सकता है।

प्र.588 कौन-सी पृथ्वी तक बद्धायुष्क जीव सम्यक्त्व के साथ उत्पन्न होता है?

उत्तर नरक-बद्धायुष्क जीव सम्यक्त्व के साथ प्रथम पृथ्वी तक ही उत्पन्न होता है। उससे नीचे जाने वाले का सम्यक्त्व यहीं छूट जाता है।

प्र.589 तीर्थंकर प्रकृति बंध वाला सम्यक्त्व से च्युत जीव दूसरी तीसरी पृथ्वी में तीर्थंकर प्रकृति बंध सम्यक्त्व बिना कैसे करता है?

उत्तर तीर्थंकर प्रकृति बंध वाला जीव दूसरी, तीसरी पृथ्वी में जाकर अर्न्तमुहूर्त्त में सम्यग्दृष्टि बनकर पुनः तीर्थंकर प्रकृति का बंध करने लगता है।

प्र.590 कौन-कौन-से जीव नरकों में उत्पन्न नहीं होते हैं?

उत्तर एकेन्द्रिय और विकलत्रय जीव नरकों में उत्पन्न नहीं होते तथा नरक गति से नरक गति में जीव, देवगति के जीव, भोग भूमि के जीव, चौबीस कामदेव एवं तीर्थंकरों के माता-पिता नरकों में उत्पन्न नहीं होते।

प्र.591 कौन-कौन-से जीव कौन-कौन-सी नरक-पृथ्वियों तक उत्पन्न हो सकते हैं?

उत्तर असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव प्रथम पृथ्वी तक, सरीसृप (छाती के बल से चलने वाले) द्वितीय पृथ्वी तक, पक्षी तृतीय पृथ्वी तक, भुजंगादि सर्प चतुर्थ पृथ्वी तक, सिंह पांचवी पृथ्वी तक, स्त्री छठी पृथ्वी तक, महामत्स्य एवं मनुष्य सप्तम पृथ्वी तक उत्पन्न हो सकते हैं।

प्र.592 संहनन की अपेक्षा कौन-से संहनन वाले जीव कौन-सी नरक पृथ्वी तक उत्पन्न हो सकते हैं?

उत्तर वज्रवृषभनाराच, वज्रनाराच, नाराच, अर्धनाराच, कीलक और असंप्राप्तासृपाटिका इन छह संहननों वाले संज्ञी जीव तीसरी पृथ्वी तक, असंप्राप्तासृपाटिका रहित पांच संहनन वाले पांचवी पृथ्वी तक, अर्धनाराच पर्यन्त चार संहनन वाले छठी पृथ्वी तक और वज्रवृषभ नाराच संहनन वाले सातवी पृथ्वी तक उत्पन्न हो सकते हैं।

प्र.593 रत्नप्रभादि सप्त नरक पृथ्वियों में क्रमशः जीव अधिक से अधिक निरन्तर कितनी बार उत्पन्न हो

सकता है?

उत्तर रत्नप्रभादि सप्त नरक पृथ्वियों में जीव क्रमशः अधिक से अधिक निरन्तर या बीच में एक पर्याय का अन्तर होते हुए भी निरन्तर कहलाते हुए-आठ बार, सात बार, छह बार, पाँच बार, चार बार, तीन बार और दो बार उत्पन्न हो सकता है।

प्र.594 अन्य पर्याय का अन्तर करने का तात्पर्य क्या है?

उत्तर हाँ! जैसे असंज्ञी प्रथम पृथ्वी तक उत्पन्न हो सकता है उसे द्वितीय बार नरक में जाने का भंग घटाने के लिए संज्ञी में आने के बाद एक बार असंज्ञी में जन्म दिलाना पड़ेगा क्योंकि नरक से निकला जीव असंज्ञी में जन्म नहीं लेता वह संज्ञी में जन्म लेकर, पुनः असंज्ञी में जन्मधारण कर नरक जावेगा तब ही अन्य पर्याय का अन्तर करते हुए भी निरन्तर का भंग (भेद) घटेगा या बनेगा। इसी तरह सम्मूर्च्छन जन्म वाले महामत्स्य को सप्तम पृथ्वी में द्वितीय बार जन्म दिलाने के लिए उसे वहाँ से निकलकर गर्भज तिर्यञ्च बनना पड़ेगा फिर सम्मूर्च्छन महामत्स्य बनकर सप्तम पृथ्वी जावेगा। उसी तरह सप्तम पृथ्वी से निकलकर जीव मनुष्य नहीं होता अतः क्रूर तिर्यञ्च बन फिर मनुष्य होकर सप्तम पृथ्वी जावेगा। इस तरह एक पर्याय का अन्तर करके भी नरक जाने पर निरन्तर कहलाता है।

प्र.595 रत्नप्रभादि सप्त नरक भूमियों में नारकियों की होने वाली लेश्या कैसी होती है?

उत्तर प्रथम और द्वितीय पृथ्वी के नारकियों के कपोत लेश्या, तृतीय पृथ्वी के उपरिम बिलों के नारकियों में कपोत लेश्या और नीचे के बिलों के नारकियों में नील लेश्या, चतुर्थ पृथ्वी के नारकियों में नील लेश्या, पंचम पृथ्वी के उपरितन बिलों के नारकियों में नील लेश्या और नीचे के बिलों के नारकियों में कृष्ण लेश्या, षष्ठ पृथ्वी के नारकियों में कृष्ण और सप्तम पृथ्वी के नारकियों में परम कृष्ण लेश्या होती है।

प्र.596 नारकियों में द्रव्य लेश्या किस प्रकार होती है?

उत्तर नारकियों में द्रव्य लेश्या (शारीरिक रंग) आयु प्रमाण काल तक एक समान ही रहती है।

प्र.597 नारकियों में भाव लेश्या में परिवर्तन किस तरह का होता है?

उत्तर नारकियो में भाव लेश्या अन्तर्मुहूर्त्त में परिवर्तनशील होती है। अर्थात् स्व-स्व कापोत आदि लेश्याओं में मंद-मंदतर-मन्दतम आदि अनेक अवान्तर भेद होते हैं।

प्र.598 नारकियों का शरीर किस संस्थान रूप होता है?

उत्तर नारकियों का शरीर हुण्डक संस्थान रूप असमान-कुरूप होता है।

प्र.599 नरक गति में उत्पन्न होने के कारण क्या हैं?

उत्तर नरक गति में उत्पन्न होने के कारण बहुत आरम्भ रूप हिंसा, बहुत परिग्रह में आशक्ति, मिथ्यात्व की प्रबलता, मद्य मधु माँस का सेवन, देव, शास्त्र, गुरु का अवर्णवाद, मुनिहत्या, परधन हरण और परस्त्री में आशक्ति आदि है।

प्र.600 सप्तम नरक पृथ्वी से निकला नारकी जीव सम्यग्दृष्टि क्यों नहीं बन सकता?

उत्तर क्योंकि उसका क्रूर तिर्यंच में जन्म लेकर मिथ्यादृष्टि रहना एवं पुनः नरक जाने रूप कार्यों में प्रवृत्त

होकर नरक में पुन: एक बार उत्पन्न होना यह नियोग है। या निश्चित स्वभाव है।

प्र.601 छठी पृथ्वी से निकला नारकी जीव क्या प्राप्त कर सकता है?

उत्तर छठी पृथ्वी से निकला प्राणी सम्यग्दर्शन की प्राप्ति कर सकता है।

प्र.602 पाँचवी पृथ्वी से निकला नारकी जीव क्या प्राप्त कर सकता है?

उत्तर पाँचवी पृथ्वी से निकला नारकी जीव सकल संयम की प्राप्ति कर सकता है।

प्र.603 चतुर्थ पृथ्वी से निकला जीव कौन-सी अवस्था प्राप्त कर सकता है?

उत्तर चतुर्थ पृथ्वी से निकला जीव केवली व मोक्ष अवस्था प्राप्त कर सकता है।

प्र.604 प्रथम, द्वितीय और तृतीय पृथ्वी से निकला जीव कौन-सी विशिष्ट अवस्था प्राप्त कर सकता है?

उत्तर प्रथम, द्वितीय और तृतीय पृथ्वी से निकला जीव त्रि-लोक का कल्याणकारी व पूज्य तीर्थंकर का पद प्राप्त कर सकता है।

प्र.605 तीर्थंकर के गर्भ में आने के छह माह पूर्व तीर्थंकर जन्म नगरी में जब रत्नों की वर्षा प्रारम्भ हो जाती है तब नरक से आने वाली आत्मा की वहाँ क्या स्थिति होती होगी?

91 / 196

उत्तर ऐसी मंगल बेला में सम्यग्दृष्टि देवगण तीर्थंकर बनने वाले नारकी जीव के चारों ओर कोट रूप बाढ़ लगाकर पहरा देते हैं और उस तीर्थंकर बनने वाली आत्मा को किञ्चित कष्ट नहीं होने देते।

प्र.606 प्रथम रत्नप्रभा पृथ्वी में नारकियों की जघन्य आयु कितनी होती है?

उत्तर प्रथम रत्नप्रभा पृथ्वी में नारकियों की जघन्य आयु दस हजार वर्ष की होती है।

प्र.607 प्रथम रत्नप्रभा पृथ्वी से लेकर अंतिम महातम:प्रभा पृथ्वी पर्यन्त नारकियों की उत्कृष्ट आयु कितनी होती है?

उत्तर सातों पृथ्वियों में क्रमश: एक सागरोपम, तीन सागरोपम, सात सागरोपम, दस सागरोपम, सत्तरह सागरोपम, बाईस सागरोपम और तैंतीस सागरोपम नारकियों की उत्कृष्ट आयु होती है।

प्र.608 द्वितीय आदिक पृथ्वियों में नारकियों की होने वाली जघन्य आयु का प्रमाण कितना है?

उत्तर द्वितीय आदिक पृथ्वियों में नारकियों की होने वाली जघन्य आयु का प्रमाण अपनी ऊपर वाली पूर्व पृथ्वी की उत्कृष्ट आयु के प्रमाण रूप है।

प्र.609 रत्नप्रभादि सप्त पृथ्वियों में नारकियों के लिए कौन-कौन-से सम्यग्दर्शनों की प्राप्ति संभव है?

उत्तर रत्नप्रभादि सप्त पृथ्वियों में नारकियों के लिए उपशम एवं क्षयोपशम सम्यग्दर्शन की प्राप्ति संभव है।

प्र.610 प्रथम नरक पृथ्वी से लेकर तृतीय नरक पृथ्वी तक रहने वाले नारकियों के लिए सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में निमित्त कारण कौन-कौन-से हैं?

उत्तर प्रथम नरक पृथ्वी से लेकर तृतीय नरक पृथ्वी तक नारकियों के लिए सम्यग्दर्शन के निमित्त जातिस्मरण, धर्मश्रवण और और तीव्र वेदनानुभव ये तीन निमित्त हैं। जिनमें से किसी एक निमित्त-कारण से सम्यक्त्व प्राप्त हो सकता है।

प्र.611 चतुर्थ नरक पृथ्वी से लेकर सप्तम नरक पृथ्वी तक सम्यक्त्व प्राप्ति के निमित्त-कारण कौन-कौन-से हैं?

उत्तर चतुर्थ नरक पृथ्वी से लेकर सप्तम नरक पृथ्वी तक सम्यक्त्व प्राप्ति के निमित्त-कारण जातिस्मरण एवं तीव्र वेदनानुभव ये दो ही हैं।

प्र.612 नरक पृथ्वियों में धर्म श्रवण होना कैसे संभव होता है?

उत्तर पूर्वभव के परिचित देव तृतीय नरक भूमि तक जाकर उपकार के निमित्त नारकियों के लिए धर्मोपदेश देते हैं, अत: तृतीय पृथ्वी तक धर्मश्रवण निमित्त संभव है।

प्र.613 तृतीय पृथ्वी के नीचे धर्म-श्रवण निमित्त संभव क्यों नहीं है?

उत्तर प्रथम कारण कि तृतीय पृथ्वी के नीचे देवों का गमन नहीं है। द्वितीय कारण वहाँ के क्षेत्र का वातावरण अनुकूल न होने से तथा परस्पर में परोपकार की भावना नहीं होने से; वहाँ के सम्यग्दृष्टि नारकी अन्य नारकियों को सम्बोधित नहीं करते अत: वहाँ धर्म श्रवण निमित्त संभव नहीं है।

प्र.614 प्रथम पृथ्वी में नारकियों की पर्याप्त अवस्था में कौन-से सम्यग्दर्शन पाये जाते हैं?

उत्तर प्रथम पृथ्वी में नारकियों की पर्याप्त अवस्था में उपशम, क्षायिक और क्षयोपशम ये तीनों सम्यग्दर्शन पाये जाते हैं।

प्र.615 प्रथम पृथ्वी में अपर्याप्त अवस्था में नारकियों के कौन-से सम्यग्दर्शन पाये जाते हैं?

उत्तर प्रथम पृथ्वी में अपर्याप्त अवस्था में नारकियों के क्षायिक सम्यग्दर्शन तथा कृतकृत्य वेदक की अपेक्षा क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन पाया जाता है।

प्र.616 कृतकृत्य वेदक की अपेक्षा क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन कैसे घटता है?

उत्तर क्षायिक सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के सम्मुख जीव जब तक मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और अनन्तानुबंधी चतुष्क का क्षय नहीं कर देता तब तक वह कृतकृत्य वेदक क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि कहलाता है और एक मत से वह मरण कर दूसरी गति में जाते समय उस जीव के अपर्याप्त अवस्था में ऐसी कृतकृत्य वेदक क्षायोपशमिक अवस्था घटित होती है।

प्र.617 द्वितीयादिक पृथ्वियों में जाते समय नारकियों की अपर्याप्त अवस्था में कोई सम्यग्दर्शन घटित होता है क्या?

उत्तर नहीं। क्योंकि सम्यग्दृष्टि जीव प्रथम पृथ्वी के आगे उत्पन्न नहीं होते।

प्र.618 मध्यलोक में स्थित शुभनाम वाले असंख्यात द्वीप समुद्रों में से मध्यस्थित शुभ नाम वाले कुछ द्वीप, समुद्रों के नाम कौन-से हैं?

उत्तर जम्बूद्वीप, लवणोदधि समुद्र, धातकीखण्ड द्वीप, कालोदधि समुद्र, पुष्करवर द्वीप, पुष्करवर समुद्र, वारुणीवर द्वीप, वारुणीवर समुद्र, क्षीरवर द्वीप, क्षीरवर समुद्र, घृतवर द्वीप, घृतवर समुद्र, क्षौद्रवर द्वीप, क्षौद्रवर समुद्र, नन्दीश्वर द्वीप, नन्दीश्वर समुद्र, अरुणवर द्वीप, अरुणवर समुद्र, अरुणभास द्वीप, अरुणभास समुद्र, कुण्डलवर द्वीप, कुण्डलवर समुद्र, शंखवर द्वीप, शंखवर समुद्र, रुचकवर द्वीप,

रुचकवर समुद्र, भुजगवर द्वीप, भुजगवर समुद्र, कुशवर द्वीप, कुशवर समुद्र और क्रौंचवर द्वीप तथा क्रौंचवर समुद्र इस तरह मध्य लोक में शुभ नाम वाले प्रारम्भ स्थित सोलह द्वीप-समुद्र हैं। (मूलाचार भाग 2)

प्र.619 लवणोदधि आदिक समुद्रों का स्वाद कैसा है?

उत्तर वारुणीवर, लवणोदधि, घृतवर और क्षीरवर ये चार समुद्र अपने-अपने नामानुसार स्वाद वाले हैं। कालोदधि, पुष्करवर और स्वयंभूरमण ये तीन समुद्र जल सदृश स्वाद वाले हैं और शेष समुद्र इक्षुरस सदृश स्वाद वाले हैं।

प्र.620 सभी द्वीप और समुद्र मध्यलोक में किस तरह स्थित हैं?

उत्तर सभी द्वीपों और समुद्रों में प्रथम द्वीप जम्बूद्वीप; थाली सदृश गोल वृत्ताकार रूप में तथा अन्य समुद्र व द्वीप चूड़ीसम वलयाकृति रूप में स्थित हैं। जो एक दूसरे को घेरे हुए हैं।

प्र.621 सर्व द्वीप और समुद्रों का विस्तार कितना है?

उत्तर नाभिसम मेरु पर्वत है जिसके, ऐसा मध्य स्थित जम्बूद्वीप का विस्तार एक लाख योजन का है। उसके आगे लवण समुद्र से लेकर स्वयंभूरमण समुद्र पर्यन्त द्वीप समुद्रों के विस्तार क्रमशः दुगने-दुगने रूप में हैं।

प्र.622 सर्व समुद्र कितनी गहराई वाले हैं?

उत्तर चित्रा भूमि की मोटाई एक हजार योजन है और सर्वसमुद्र एक हजार योजन गहराई वाले हैं। अर्थात् सर्व समुद्रों का तल भाग चित्राभूमि को भेदकर वज्रापृथ्वी पर स्थित है।

प्र.623 ढाईद्वीप किसे कहा जाता है?

उत्तर जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड और पुष्करार्ध द्वीप को ढाई द्वीप कहा गया है।

प्र.624 मानुषोत्तर पर्वत किसे कहते हैं?

उत्तर पुष्करार्ध द्वीप को इष्वाकार रूप से मध्य से भेद करने वाला एवं ढाई द्वीप की सीमा बतलाने वाला पर्वत तथा जिस पर्वत के आगे मनुष्यों की गति नहीं होती है और मनुष्य उसके भीतर ढाई द्वीप में ही पाये जाते हैं ऐसी सीमांकन करने वाला पर्वत मानुषोत्तर पर्वत कहलाता है।

सम्यग्ज्ञान भूषण पदवी हेतु छटवां प्रश्न पत्र

समय : .3.. दिन | अंक : 100

❖ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं। ❖ सभी प्रश्नों के उत्तर लाइन वाले पेपर्स पर पेन बनाकर लिखें। ❖ उत्तर राष्ट्र-भाषा हिन्दी में ही लिखें। ❖ उत्तर लिखकर काटे जाने या घिसे जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।

प्र.1. लोक का मध्यभाग कौन-सा कहलाता है ?
प्र. 2. लोक कहाँ पर स्थित है?
प्र. 3. लोक की ऊँचाई कितनी है?
प्र. 4. सम्पूर्ण लोक को किसने बनाया?
प्र. 5. त्रसनाड़ी में त्रस जीवों से रहित स्थान कौन-कौन-सा है?
प्र. 6. त्रस नाड़ी कहाँ है और वह कितनी लम्बी, चौड़ी और ऊँची हैं?
प्र. 7. नरक और नारकी किसे कहते हैं?
प्र. 8. रत्नप्रभा नामक पृथ्वी के कितने भाग हैं?
प्र. 9. कौन-कौन-से जीव कौन-कौन-सी नरक पृथ्वियों में जन्म ले सकते हैं?
प्र.10. कौन-कौन-से जीव नरकों में जन्म नहीं लेते?
प्र.11. तीर्थंकर प्रकृति-बंध करने वाला जीव किस कारण नरक में जाता है ?
प्र.12. नरकों का वातावरण कैसा है?
प्र.13. नरकों से निकले नारकी किन-किन अवस्थाओं में पैदा नहीं होते हैं?
प्र.14. तीर्थंकर प्रकृति बंध वाला जीव कौन-सी नरक-पृथ्वी तक जा सकता है?
प्र.15. नरक से निकला जीव कौन-से पदों को धारण नहीं कर सकता है?
प्र.16. मानुषोत्तर पर्वत किसे कहते हैं?
प्र.17. सर्व द्वीप और समुद्रों के बीच में कौन-सा द्वीप किस आकार में स्थित है?
प्र.18. तीर्थंकर के गर्भ में आने के छह माह पूर्व नरक में उसकी स्थिति क्या होती है?
प्र.19. ढाई द्वीप किसे कहते हैं?
प्र.20. सर्व द्वीप और समुद्रों का विस्तार कितना है?

आधार :आचार्यश्री आर्जवसागर विरचित-' **आगम-अनुयोग** ', (प्रश्नोत्तर प्रदीप)

प्रश्न पत्र के पूर्व में दिये गये प्रश्नोत्तरों को पढ़कर उनका चिंतवन-मंथन कर उत्तर-पुस्तिका की पूर्ति करें।

परीक्षार्थी परिचय

नाम..... उम्र .....
पिता/माता/पति का नाम .....
पता .....
.....
मोबाईल/फोन नं. .....

सम्यग्ज्ञान भूषण पदवी हेतु शिविर का आयोजन

आगम अनुयोग प्रश्नोत्तर प्रदीप

मंगल आशीर्वाद एवं प्रेरणा- आचार्य गुरुदेव श्री आर्जवसागर जी महाराज